ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 7 | April - 2016

Review Of Research

धूमिल और नामदेव ढसाळ के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

आनंदा मारुती कांबळे
आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वैभववाडी (सिंधुदुर्ग), महाराष्ट्र.

प्रस्तावना :

भारत में अनेक भाषायें बोली जाती हैं। सभी भाषाओं में साहित्य की सृजना होती रहती है। भाषाएँ भिन्न है फिर भी साहित्य की आत्मा एक होती है। विभिन्न भाषाओं और भाषिकों के साहित्य में जो अंतराल है उसे दूर करने के लिए तुलानात्मक अध्ययन आवश्यक है। अतः ''तुलनात्मक अध्ययन बहुआयामी होती है। इसके माध्यम से दृष्टिकोण में विस्तार आता है, संकुचित मनोवृत्ति से मुक्ति मिलती है। यही नहीं हम औरों के महत्व को स्वीकारने लगते हैं और उनसे रागात्मक संबंध स्थापित करते है।''

साठोत्तरी काल का समय राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उथल–पुथल का रहा है। इस स्थिति में आम आदमी अनेक समस्याओं से घिर चुका था, दब चुका था और साठोत्तरी कविताओं में प्रमुखत : इस आदमी की आवाज दिखाई देती है। साठोत्तरी नये कवियों व्यक्तिगत और सामाजिक धरातलों पर यथार्थ की अभिव्यक्ति की हैं। अत : ''साठोत्तरी कविता, सांस्कृतिक की कविता है, यातना–पीडा की कविता है, टुटन, व्दिधा मनःस्थिती की कविता है, जो आम आदमी का सीधा साक्षात्कार करनेवाली कविता है।'' साठोत्तरी हिंदी कविता में 'जनवादी कविता' को प्रभावी बनाने के लिए धूमिल का योगदान हैं। बच्चन सिंह धूमिल के कविता के विषय में कहते है – ''धूमिल का उदय धूमकेतु की तरह होता है जिसमें अग्नि भी है, धुँआ भी। आधुनिकता है और अग्नि प्रगतिशीलता।''

साहित्य हमेशा समाज और समय के साथ चलता है। इसी कारण साहित्य में समय और समाज का प्रतिबिंब झलकता हैं। साहित्य के माध्यम से ही साहित्यकार अपने विचारों को अभिव्यक्ति देता है। अत : इसी कारण साहित्य में भी विशेषत : कविताओं में साहित्यकार अपने अनुभूत अनुभूतिओं को अभिव्यक्त करता हैं।ऐसी ही साहित्य मराठी में भी सृजित होता है। मराठी के साहित्य में साठोत्तरी काल में 'दलित साहित्य' का अपना स्थान हैं। महाराष्ट्र में डॉ. बाबासाहेब आंबडेकर आंदोलन से दलित कविताओं का उद्‌गाम हुआ है। दलित कविताओं के माध्यम से दलित संस्कृति का चित्रण करने का कार्य नामदेव ढसाळ ने किया है। मराठी प्रान्त एवं भाषा से आया हुआ दलित साहित्य हिन्दी प्रान्त और भाषा में भी अभिव्यक्ति पा रहा है।

साठोत्तरी काल में दलित साहित्य के अग्रणी नामदेव ढसाळ ने अपनी लेखणी चलाई है। नामदेव ढसाळ कविता के विषय में डॉ.बिरा पारसे का मत है – ''नामदेव ढसाळ कि कविताएँ क्रान्ती के समान है, उसमे केवल

परिस्थितीयों का चित्रण ही नही बल्की एक सशक्त क्रान्ती लाने में क्षमता है।'' इसके साथ ही डॉ. भारतीय निरगुडकर नामदेव ढसाळ जी के कविताओं के विषय में लिखते है – ''ढसाळ जी के कविताओं में तिव्र आशावाद है क्रान्ती पर उनका विश्वास है।'' अत : नामदेव ढसाळ मराठी के साहित्य में नई चेतना उजागर करने में सफल रहें हैं। साठोत्तरी काल के मराठी साहित्य में नामदेव ढसाळजी का स्थान महत्वपुर्ण हैं।

साठोत्तरी काल के मराठी के साहित्यिक अपने अनुभूत को अनुभुतियों को अभिव्यक्त करने में और हिंदी के कवि यथार्थ के धरातल पर आकर समाज में व्याप्त अनाचार और विषमता को भागते हुए अपने वाणी को अभिव्यक्ति दे रहे थे। अत : दोनो भाषाओं में एक आम आदमी के वेदना को स्वर देनेवाला सहित्य निर्मित हो रहा था।

नामदेवढसाळजी का साहित्य सिर्फ एक विशिष्ट व्यक्ति समुदाय या जात समुदाय का साहित्य नहीं है अपितू वह सभी विश्व के मानव का साहित्य जान पडता है, क्योंकि साधारण या आम आदमी भी उन विभिषिका से गुजरता है। नामदेव ढसाळजी अपने ही अनुभवों को अभिव्यक्त करते हुए कहते है – ''जिवंतपणीच नरक वाटयाला आला/मेल्यानंतरच्या स्वर्गाचे अप्रुप कशाला ?'' एक आम व्यक्ति के जिवन में संघर्ष है, इन संघर्षो से जुझते – जुझते उनमें कोई आशा नही है कि उन्हे मृत्यु के बाद स्वर्ग मिले। धूमिल के विचार जिवन के विषय में कुछ ऐसा ही है वे जिवन को जिना भी एक मजबूरी मानते है और इसके लिए अपने मूल्यों को अस्मिता को त्यागना जरूरी समझते है। अत : ''सचमुच मजबुरी है/मगर जिन्दा रहने के लिए/पालतू होना जरूरी है।''

भारत देश अब आजाद हो चुका है, परंतु इस आजादी के बाद भी समाज के सामान्य लोग अपने हक के लिए, न्याय के लिए जब आवाज उठाते है, उन आवाजों को दबाया जाता है, मोर्चोपर लाठीचार्ज, बेकसुरों को सजाऍ दि जाती है। ऐसी समाज व्यवस्था से आम आदमी बेहाल है। नामदेव ढसाळ जी अपेन अनुभूत अनुभूतियों को याद करते हैं–''जुलमाच्या अंधारात बुडालेला, हा देश, हे गांव, हे शहर, –/आठवणींचाडंख अशी मेलेली वर्ष पुन्हा, पुन्हा जागी करतो/, प्रिय रक्ताने चिंब भिजलेली सकाळ अजुन ही मला आठवते/जिच्या प्रवाहाने तुझ्या ही डोळयांच्या काजळ रेषा वाहून गेल्या'' इस जनतंत्र में अपने उपर हो रहे आत्याचार अन्याय के लिए लढ रहे लागों का क्या हाल होता है इसका वर्णन धूमिलजी करते है – खून के थके में तलफता हुआ/जब वह युवा जिस्म/गिर पडा रास्ते के ठीक बीचोबीच/उस वक्त जनतंत्र किधर था ?''

अत : धूमिल का इस जनतंत्र से विश्वास उड गया हैं। उन्हें आम आदमी की पिडा महत्वपुर्ण है। आजादी के बाद भी इस समाज व्यवस्था में हमेशा, नैराश्य, दैन्य, अन्याय मिला हैं, इस लिए ढसाळजी आजादी इस शब्द से ही उनका विश्वास उठ गया है – ''पंधरा ऑगस्ट एक संशयास्पद महाकाय गोष्ट/स्वातंत्र्य कुठल्या गाढवीचं नांव आहे.''

धूमिलजी को भी आजादी पर विश्वास नहीं रहा है और वे आजादी का अर्थ ढूँढते हुए कहते है – मैं सोचता रहा,/और धूमता रहा/टुटे हुए फुलों के नीचे /विरान सडको पर ऑखो के/अन्धे रेगिस्तानों में/फटे हुए पालों की अधुरी जल–यात्राओं में/टुटी हुई चिजो के ढेर में /मैं खोयी हुई आजादी का अर्थ/ढूँढता रहा।'' धूमिल और भी आगे कहते है – ''अपने – आप से सवाल करता हूँ/क्या आजादी सिर्फ तीन धके हुए रंगो का नाम है/जिन्हे एक पहिया ढोता है/या इसका कोई खास मतलब होता हैं ?'' इस समाज व्यवस्था के कारण मानव अपने नैतिक मूल्यों को भूलता जा रहा हैं। इन्सानों में इन्सानियत दिन ब दिन कम होती जा रहीं हैं। बुध्दीप्रधान संस्कृति देश विकास के लिए जरूरी हैं, परंतु देश की एकता बनाये रखने के लिए नैतिक मूल्य एवं मानवता को देना आवश्यक हैं। इस पद खेद करते हुए नामदेव ढसाळजी कहते हैं – ''दिवसेंदिवस माणस कशी छोटी–छोटी होत जातायत/चुका आपण करतो/दोष सैतानाला देतो.''

धूमिलजी भी चाहते हैं कि सभी मिलजुल कर रहे, भाईचारा हो परन्तु आज का वक्त और ही कह रहा हैं। धूमिल जी को भी नैतिक मूल्यों की गिरावट एवं मानवता को पूजनेवाले आज किसी प्रकार व्यवहार करते हैं इसका वर्णन करते हैं – ''अब ऐसा वक्त आ गया है जग कोई/किसी का झुलसा हुआ चेहरा नहीं देखता है/अब न तो कोई किसी का खाली पेट/देखता है, न थरथराती हुई टॉगे/हर आदमी, सिर्फ, अपना धन्धा देखता है/सबने भाईचारा भुला दिया है/आत्मा की सरलता को मारकर/मतलब के ॲधेरे में/सुला दिया हैं।''

आम आदमी को इस समाज व्यवस्था से शोषण, दमण, तिरस्कार और उपेक्षा ही मिली है। उनका जिवन हमेशा कष्टों से घेरा होता है, परन्तु अपने परिवार के लिए भरपेट भोजन की व्यवस्था करना असंभवसा लगता है। उनके जिवन में अभाव ही अभाव रहता हैं। समाज का एक वर्ग सुख से पिडित है तो दुसरा वर्ग सुख ऐश आरामों से लबालब हैं। इस समाज व्यवस्था के दोनो वर्गों का वर्णन ढसाळजी बहुत ही मार्मिकता से करते हैं–'' मीही पाहिली आहेत एकीकडे पंचपक्वान्नांच्या ताटाला /लाट मारून जाणारी माणसे /कुत्र्या –मांजरांच्या सोबत

अन्न शोधणारी अनाथ पोरे /या दोन टोकामधल्या रिकाम्या जागेत माझ्याही /भुकेने अन्न शोधण्याचा प्रयत्न केला.''

धुमिलजी भी इस विषमता को जानते हैं। सामान्य जनता को कष्ट के सिवाय कोई उपाय नही हैं। पूँजीवादी समाज के धनी लोग अपने जीवन के सभी जरूरतों को पुरा करने में मशगुल हैं इसपर व्यंग करत हुए कहते हैं ''वह कौन–सा प्रजातांन्त्रिक नुस्खा हैं/कि जिस उम्र में /मेरी माँ का चेहरा/भुरियो की भोली बन गया है/उसी उम्र की मेरी पडोस की महिला/के चेहरे पर /मेरी प्रमिका के चेहरे सा /लोच है।''

कवि धुमिलजी इस भूख की विभिषिका को जानते हुए समाज के दो वर्गो में आम आदमी की पीडा को चित्रित करते हैं'' वहाँ बंजर मैदान /कंकाल की नुमाइश कर रहे थे /गोदाम अनाज से भरे पडे थे /और लोग भूखे मर रहे थे /मैने महसूस किया कि मैं वक्त के /एक शर्मनाक दौर से गुजर रहा हूँ।'' नामदेव ढसाळजी ने ऐसी समाजव्यवस्था की कल्पना की है उसमें समाज ,न्याय हो। इन्सान को इन्सानियत की नजर से देखे , जातिभेद ,धर्मभेद ,लिंग भेद ना हो । अतः वे एक विषमता रहित मानव केंन्द्रित समाज व्यवस्था को चाहते है ''नंतर उरल्या सूरल्यांनी कुणालाही गुलाम करू नये ,लुटू नये /काळा –गोरा म्हणु नये, तु ब्राम्हाण ,तु क्षत्रिय ,तु वैश्य ,तु शुद्र, असे हिनवू नये /कुठल्याही पक्ष काढू नये घरदार बांधू नये जाती न मानण्याचा /आयभैन न ओळखणाऱ्यांचा गुन्हा कुरू नये/आभाळाला आजोबा आणि जमीनीला आजी मानून त्यांच्या कुशीत/गुण्यागोविंदाने आनंदाने रहावे/चंद्रसुर्य फिके पडतील असे सचेत कार्य करावे/एक तीळ सर्वांनी करवून खावा माणसावरच सुक्त रचावे/माणसाचेच गाणे गावे माणसाने ''.

धूमिलजी भी नामदेव ढसाळ की तरह शोषण मुक्त स्वस्थ समाज की कल्पना करते है। धुमिल के शब्दों में ''अब काई बच्चा/भूखा रहकर स्कूल नहीं जायेगा/अब कोई दवा के अभाव में/घुँट–घुँटकर नहीं मरेगा/अब कोई किसी की रोटी नाही छिनेगा। अतः नामदेव ढसाळ और धुमिल जी एक साहित्यकार होने के नाते अपने दायित्व को निभाते है। उन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक,राजनितिक,आर्थिक ,परिस्थितीयों का अंकन किया है और समाज को नयी दृष्टी।

नामदेव ढसाळ ने अपने साहित्य में शतकों से वर्णव्यवस्था के कारण ग्रसित दलित समाज का वर्णन किया हैं। देश की आजादी तो सभी को मिली हैं परंतु दलित समाज को नैराश्य ,लाचार ,दैव्य ,अन्याय जिवन ही मिला है। उनके साहित्य का आधार शतकों से उपेक्षित लोग है। धूमिल ने अपने साहित्य में साधारण जन जीवन की सच्चाई को उसके पूरे उव्देग,उसकी सम्पूर्ण नग्नता ओर तल्खी के साथ प्रस्तुत'' किया हैं। प्रजातंत्र पर से उनका विश्वास उठ गया हैं उन्हें एक दुसरे प्रजातंत्र की तलाश हैं इस लिए अशोक वाजपेयी धुमिल को दुसरे प्रजातंत्र की तलाश के कवि कहते है।अतः उनके साहित्य की आत्मा आम आदमी हैं उनकी हैं उनकी वेदना हैं।

नामदेव ढसाळ और धुमिल की काव्यभाषा में वर्तमान समय की विसंगतियों पर चोट करने के लिए उपयोगी सिध्द हुई हैं। धुमिल की काव्य भाषा के संबंध में बच्चनसिंह कहते है। '' वह शब्दों का चुनाव अपने गाँव के खेत खलिहानों के सढत चेहरों ,तनी हुई गुट्ठीयों ,छोटी जातियों के घुटते हुए जीवन ,विसंगतियों ,फुटपाथों मोचियों ,भंगियों को चुनाव है। धुमिल के कविताओं में मुहावरों को प्रयोग हुआ हैं। इसके विषय में बच्चनसिंह कहतें हैं ''धूमिल ने जिन मुहावरों का प्रयोग किया वे नये और टटके ही नहीं है,बल्की धक्कामार भी हैं। धूमिल स्वयम अपने बारें में कहते हैं ''हाँ, हाँ मैं कवि हूँ/कवि यानी भाषा में भदेस हूँ।नामदेव ढसाळ की कविता ''परंपरागत मूल्यों को नष्ट करणेवाली कविता है। इसलिए शब्द और भाषा की आग मान्य नहीं अर्थात कविताओं का मूलतत्व झूठ, अमूर्त और कल्पना पर निर्भर नही है। अतः उनके कविता में शब्द और भाषा को स्वगत अनुभवों का अभिव्यक्ति देने के लिए सहाय्यक बनते है।

संदर्भ ग्रंथ सुचीः

1. संपादक डॉ.भ.ह.राजूकर , डॉ.राजकमल बोरा–तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप और समस्याएँ–वाणी प्रकाश दिल्ली प्रथम संस्करण 1990पृष्ठ क्र.114
2. डॉ. सुधाकर शेंडगे –धूमिल की काव्यकला–विद्या प्रकाशन ,नई दिल्ली चौथी संस्करण 2007 पृष्ठ क्र 21
3. बच्चनसिंह–हिंदी साहित्य का दुसरा इतिहास–राधाकृष्ण प्रकाशन ,नई दिल्ली चौथी संस्करण 2012 पृष्ठ क्र 451
4. डॉ. बिरा पारसे दलित कवितेतील अस्मिता–स्वरूप प्रकाशन,औरंगाबाद प्रथम संस्करण –2008 पृष्ठ क्र.113
5. वही पृष्ठ क्र.117